ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

//समकालीन हिन्दी साहित्य में पर्यावरणीय अनुशीलन//

डॉ. ज्योति पटेल
सहा० प्राध्यापक (हिन्दी)
शास०स्नातकोत्तर महाविद्यालय
टीकमगढ़ (म.प्र.)

सारांश:- वर्तमान में चारों ओर फैले हुए प्रदूषण को कम करने हेतु हम कह सकते है कि प्राचीन एवं वर्तमान वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों के समान ही हिन्दी साहित्य की परम्परा में कवियों, और लेखकों ने पर्यावरण के प्रतिअपनी जिम्मेदारी को निर्वहन करते हुए लगातार समाज को इस ज्वलंत समस्या के बारे में जागरूक करने का प्रयास किया और यह प्रयास अनवरत जारी है। हिन्दी साहित्य सदैव दर्शन से प्रभावित रहा है। अत: प्रकृतिके प्रतिप्रेम संरक्षण आत्मानुभूतितथा किसी को भी हानि न पहुँचाने का भाव हिन्दी साहित्य में बहुतायत से पाया जाता है। हिन्दी साहित्य में प्रारंभ से ही प्रकृतिके अनावश्यक दोहन शोषण का विरोध किया गया है। हिन्दी के सभी कवियों, लेखकों, उपन्यासकारों ने प्रकृतिके अनावश्यक पोषण के विरूद्ध आवाज उठाकर मनुष्य को आत्मानुभूतिकी ओर प्रेषित किया है। जहाँ हिन्दी साहित्य में आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक किसी न किसी रूप में कवियों में काव्य में प्रकृतिएवं पर्यावरण को वर्णित किया है, वहीं आधुनिककाल से छायावादी काव्यों में पर्यावरण के प्रतिप्रौढ़ता द्रष्टिगोचर होने लगती है यहाँ तक की कुछ उपन्यासकारों ने पर्यावरण चिंतन को केन्द्र में रखकर कई उपन्यासों का सृजन किया और पर्यावरण जागरूकता से सम्बंधित आधुनिक प्रश्नों को प्रमुखता से उठाया है और कहा कि प्रकृति ने हमें जीवित रहने के लिए हर एक सुविधा तथा सहुलियत प्रदान की है तो अब हमारा कर्तव्य है कि हर व्यक्तिअपनी नैतिक जिम्मेदारी को समझे और पर्यावरण को स्वस्थ्य बनाने हेतु कारगर प्रयास करने की ओर अन्मुख हों।

भूमिका:- भारतीय मानुषों में यह बात दीर्घकाल से बैठी हुई है कि हम सब प्रकृतिके ही अंग है, हमारा शरीर प्राकृतिक शक्तियों का ही पूँजीमतरूप है भारतीय संस्कृतिमें अग्नि, नदियाँ, वृक्ष, सूर्य, पशु, पक्षी, आदि अनेक प्राकृतिकघटकों को पूज्यनीय माना जाता रहा है अधिकतर भारतीय पर्व व त्योहार भी प्रकृतिसे जुडे हुए हैं, चाहे वे बैसाखी हो या बसंत पंचमी पर्यावरण यहाँ जीवन की रीढ़ माना जाता है।

"वृक्ष हमारे लिए जमीन पर चुपचाप खडी रहने वाली हरी चीज कभी नहीं रहे, ये हमारे जीवन में रचे बसे हैं। हमने उन्हें अपनी कथा, कहानियों, लोकगीतों और नाना कलाओं में सँजाये रखा है।"

भारतीय सभ्यता संस्कृतिका लम्बा दौर प्रकृतिकी पावन गोद में ही विकसित हुआ है, जिसमें शुद्ध वायु, खुले आकाश अखण्ड हरितिया एवं निर्मल जलधारा के सानिध्य में हमारी चिंतनधारा को अनुपठित करने वाले गौरवं ग्रंथ रचे गये।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

पर्यावरण शब्द एवं उसका अर्थ अत्यंत व्यापक है जिसमें सारा ब्रम्हाण्ड ही समा जाता है। परि अर्थात हमारे चारों ओर का आवरण अर्थात ढकना ही पर्यावरण है। हम सभी तथा हमारा यह संसार आकाश, वायु, जल, पृथ्वी, अग्नि तथा वन वृक्ष, नदी, पहाड़, समुद्र एवं पशु पक्षी से आवृत है। उपर्युक्त समस्त तत्वों तथा पदार्थों का समग्र रूप ही पर्यावरण है, उसी में सब पैदा होते है, जीवित रहते है, साँस लेते हैं, फलते-फूलते हैं और अपने समस्त कार्यकलाप करते हैं। प्रकृतिके इन पाँच तत्वों से मिलकर ही मानव शरीर की रचना हुई है। तुलसीदास ने रामचरित्रमानस के 'किष्किन्धाकाण्ड'में लिखा है कि मनुष्य का शरीर भी प्रकृतिके पाँच तत्वों- पृथ्वी, जल, पावक, गगन व समीर से मिलकर बना है:-

छितिजल पावक गगन समीरा ।
पंच रचित अति अधम सरीरा ।

भारतीय साहित्य और दर्शन सम्पूर्ण रूप से पर्यावरण केन्द्रित रहे हैं। पर्यावरण कोई आधुनिक संपृत्यय नहीं है वरन वैदिक काल से निरंतर चला आ रहा है।

आदि कवि बाल्मीकि को काव्य प्रेरणा कोंचे जोड़े को देखकर ही मिली थी, कालिदास का सम्पूर्ण रचना संसार प्रकृतिकी गोद से ही जन्मा, विरह का बारहमासा द्वारा चित्रण रामचरितमानस के राम के द्वारा पुशु पक्षियों से सीता का पता पूछना आदि हमारे जीवन की इस अंर्तधारा को सहज ही दर्शाता है।

वैदिक काल के अघ्ययन से पता चलता है कि तत्कालीन सभ्यता के व्यक्तिप्रकृतिकी पूजा करते थे। प्रथ्वी उनकी माता थी, जिसकी रक्षा के लिए तथा जिस पर जीवन बनाए रखने के लिए वे अपने सभी कर्तव्यों का पालन करते थे। वैदिक युग के लोग पौधो जैसे तुलसी, बरगद, पीपल, आदि की पूजा करते थे जिससे वे उनके औषधीय गुणों को नष्ट होने से बचा सके तथा इस प्रकार पर्यावरण को शुद्ध रख सकें। उनके व प्रकृतिके मध्य माता पुत्र का पवित्र संबंध था जिसका वर्णन हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के कुटज में भी मिलता है।

''यह धरती मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ। इसीलिए मैं सदैव इसका सम्मान करता हूँ और मेरी धरती माता के प्रतिनतमस्तक हूँ।''

भारतीय संस्कृतिमें वन और वनस्पतिका बहुत अधिक महत्व रहा है। हमारे ऋषि-मुनि वनों में ही आश्रम बनाकर रहते थे। प्रकृतिसे उनका गहरा जुड़ाव था। मानव वन्य जीव-जन्तु, वृक्ष, पर्वत, सरिताएँ, ऋतुएँ आदि सभी परस्पर रूप ये जुडे हुए हैं तथा पर्यावरण के अभिन्न अंग है।

अत: यह उल्लेखनीय है कि वेदों, उपनिषदों, पुराणों, स्मुतियों सूत्रग्रंथों आदि सभी में सम्पूर्ण भारतीय संस्कृतिके भत्योज्जवल रूप प्रतिनिहित हैं जिनकी रचना वनाआश्रमों में हुई है।

भक्तिकालीन कवियों जैसे तुलसी, रहीम, कवीर, मीराबाई आदि सभी ने पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए अपने साहित्य द्वारा रचित 'रामचरितमानस'में इस प्रकार अनेक पृसंग मिलते हैं जहाँ राम, गंगा आदि नदियों की पूजा करते तथा सीता वृक्षों को सींचती दिखाई देती है। एक पृसंग में समुद्र को सोख देने के लिए कहते है, परन्तु राम उनके इस सुझाव को स्वीकार नहीं करते है। वह कहते है कि ऐसा

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

करने से समुद्र के जीव जन्तु वनस्पतियाँ नष्ट हो जाएँगें तथा पर्यावरण को क्षति पहुँचेगी इस प्रकार के अनेको उदाहरण हमें प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में देखने को मिलता है जो पर्यावरण संरक्षण के प्रति मनुष्य में चेतना जागृत करते हैं। जहाँ हिन्दी साहित्य में आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक किसी न किसी रूप में कवियों ने काव्य में प्रकृति एवं पयार्वरण को वर्णित किया है, वहीं आधुनिक काल से पर्यावरण के प्रति प्रौढ़ता द्रष्टिगोचर होने लगती है।हिन्दी साहित्य में छायावाद को तो प्रकृति का उद्यान ही माना जाता है, जहाँ मनोभावों का प्रकृति से सहज ही सामंजस्य हो जाता है। छायावादी काव्य को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने नई काव्यधारा का तृतीय उत्थान कहा है, छायावादी काव्य में प्रकृति संबंधी कविताओं के बाहुल्य और उसमें प्रतिफलित प्रकृतिपरक द्रष्टिकोण को देखकर कुछ विचारकों ने छायावाद को प्रकृति काव्य भी कहा है। इस काल के छायावादी कवियों मैथिलीशरण गुप्त, मुकुटधर पाण्डेय, नन्ददुली बाजपेयी, सुमित्रानंदनपंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा, हरिवंशराय बच्चन आदि ने उपने काव्य में प्रकृति एवं पर्यावरण सौन्दर्य का चित्रण सुन्दरता के साथ किया है। इसे आधुनिक काल या गद्यकाल का परिवर्तित युग भी कहा जाता है। हिन्दी साहित्य के काव्य की नवीनधारा (छायावाद) के प्रमुख स्तम्भ प्रसाद जी ने अपने काव्य में प्रकृति और पर्यावरण को साथ संजोया है जिससे प्रसाद जी के काव्य में पर्यावरण व प्रकृति के प्रति गहन चिन्तन परिलक्षित होता है।

आधुनिककाल के महाकाव्य 'कामायनी'में जयशंकर प्रसाद ने यह दर्शाया है कि प्रकृति के निर्मम दोहन का भाव हमारी संस्कृति में हमेशा से अस्वीकार्य रहा है। ''कामायनी''में प्रसाद जी ने ''चिन्त सर्ग में ऐसी महानाश की कथा कहकर अन्धभोग के प्रति हमें आगाह किया। वहीं पर्यावरण के महत्व दर्शाते हुए ''कामायनी'में इंद्रा की यह सुन्दर पंक्तिया दर्शनीय है:-

''देखे मैंने पे शैल श्रृंग जो अचल हिमानी से रंजित'' उन्मुक्त, अपेक्षा भरे तुंग अपने जड़ गौरव के प्रतीक, वसुधा का कर अभिवान भंग अपनी समाधि में रहेख्, सखी बह जाती हैं नदियाँ, कुछ स्वेत बिन्दु, उसको लेकर वह स्तिंभित नयन गत शोक, क्रोध, स्थिर मुक्ति, प्रतिष्ठा मैं वैसी चाहता नहीं, इस जीवन की मैं तो अबाध गति मरूत सदृष हूँ चाह रहा 'अपने मन की जो चूम चला जाता अग, जग, प्रतिपग में कंपन की तरंग वह ज्वलनशील गतिमय पतंगा,इस दुखमय जीवन का प्रकाश-नभ नील लता की''

प्रसाद ने अपने महाकाव्य 'कामायनी'के पात्र 'इडा'की इन पंक्तियों में मानव जीवन की निराशा और पर्यावरण के महत्व को दर्शाया है। प्रसाद की इन पंक्तियों में यह चित्रित किया है कि मानव के जीवन में व्याप्त निराशा का कारण वह स्वंय है। जो प्रकृति हमारी निराशा को आशा में परिवर्तित कर हमारे मन में सुख व शाँति का संचार करती है, मनुष्य ही इसे नष्ट करने में लगा हुआ है।

छायावाद के अतिरिक्त प्रयोगवादी काल के प्रवर्तक अज्ञेय के काव्य में भी मानव और पर्यावरण के अत: संबंधों की झलक मिलती है। उन्होंने अपनी कविता 'आसाध्य वीणा'में मनुष्य को अंह का त्याग करने तथा आत्मानुभूतिप्राप्त करने की प्रेरणा दी है क्योंकि आत्मानुभूतिद्वारा ही मनुष्य संवय को अपने सीमित दायरे व सोच से बाहर निकाल सम्पूर्ण विश्व व इसके लोकतंत्र के साथ सम्मिलित कर सकता है।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

इस प्रकार वह मानव को अंह से मुक्ति का मार्ग दिखाकर व मानव को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बना, पर्यावरण संरक्षण पथ पर अग्रसर करते हैं। दूसरी ओर हिन्दी गद्य में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध भी पर्यावरणीय सभ्याताओं को व्यक्त करने का सुन्दर माध्यम रहे हैं। अन्होंने न केवल पर्यावरण के अनुचित दोहन व प्रदूषण के विषय में लिखा, अपितु पर्यावरणीय स्त्रोंर्तों के उचित उपयोग व संरक्षण के विषय में महत्वपूर्ण सुझाव व निर्देश भी दिये। आम फिर बौरा गए, अशोक के फूल, मनुष्य का भविष्य आदि निबंधों में जलवायु परिवर्तन ग्लोबल वार्मिंग, जल और वायु प्रदूषण तथा मनुष्य के आत्मक्रेन्द्रित दृष्टिकोण पर उनका चिन्तन दर्शनीय है।

विख्यात पर्यावरणवादी 'अनुपम मिश्र की अमर कृति 'आज भी खरे है तालाब', वर्तमान में पर्यावरणीय संवेदना की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति है। वरिष्ठ साहित्यकार प्रभाकर श्रोत्रिय ने जानी मानी पत्रिका 'ज्ञानोदय' का एक अंक 'पानी' जैसे महत्वपूर्ण विषय पर निकाला था। आज भी अनेक पत्रिकाँए जल, जंगल और जमीन जैसे महत्वपूर्ण मुद्दो पर विशेषांक प्रकाशित करती है।

'दिनमान'में कणीश्वरनाथ रेणु ने बाढ और सूखे वाले इलाकों का दौरा कर रिपोर्ताज की शक्ल में जो स्तम्भ लिखे थे,वे ऋणजल-धनजल नाम से प्रकाशित होते थे और पर्यावरण के संदर्भ में हमारे हिन्दी साहित्य की थाती है।

प्रेमचन्द्र जैसे युग प्रवर्तक साहित्यकार के साहित्य में भी पर्यावरणीय संवेदना के दर्शन होते है, ''पूस की रात''कहानी में अपने प्राकृतिक परिवेश का पर्दा खोलते हैं। प्रेमचन्द ने ''दो बैलों की कथा''के माध्यम से प्रकृतिके उदान्त संवेदनात्मक पक्ष को उभारा है। यात्रा वृतान्तों के अन्तर्गत निर्मल वर्गो के ''चीडों पर चाँदनी''अज्ञेय के 'अरे यायावार रहेगा याद'महत्वपूर्ण रचनाँए है। निर्मल वर्मा के यात्रा वृतान्त प्रकृतिके साथ गहरे संवेदनशील रिश्तों का खाका प्रस्तुत करते है।

अज्ञेय ने 'अरे यायावार रहेगा याद'में प्रकृतिका स्थल वर्णन करके प्रकृति के स्पंदन का सक्षम अंकन किया है। प्रकृतिके छिपे हुए इतने सौन्दर्य स्तरों की खोज की है जो उनकी बौधिकता का ही नहीं उनकी रागात्मकता का भी परिचायक है।

यहाँ आकर हमने समझा की पर्यावरण की विषयवस्तु केवल प्रदूषण तक सीमित नहीं है। इसका सबसे प्राथमिक पहलू प्राकृतिकसंसाधनों के स्वत: घटित पारस्परिक संतुलन की रक्षा है क्योंकि सम्पूर्ण ब्राम्हाण्ड एक कुटुम्ब है, यहाँ किसी का अलग अस्तित्व नहीं हैं।

पर्यावरण चिंतन को केन्द्र में रखे हुये कुछ प्रमुख उपन्यास निम्नलिखित है। ''नीलकण्ठ हुआ मरंग घोडा'' (महुआमाजी), रह गई दिशाँए इसी पार (संजीव), हिडिम्बा (एस आर हरनोट), कुइयाँजान (नासिरा शर्मा) इस उपन्यासों में पर्यावरण चिंतन सम्बंधी आधुनिक प्रश्नों को प्रमुखता से उठाया।

'रह गई दिशाँए इसीपार'में संजीव जैववैज्ञानिकों द्वारा क्लोनिंग और जेनेटिक्स के क्षेत्र में की जाने वाली अभूतपूर्व उपलब्धियों को मानवीय संबंधों के जटिल संसार में पनपने वाली विकृतियों की संज्ञा दी गई है। संजीव इसमे जीवों की महत्ता को दर्शाते तथा कृत्रिमता का विरोध करते हैं। ''मरंग घोड़ा नीलकंठ हुआ

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

''उपन्यास में महुआमाजी आदिवासियों व प्रकृति के टूटते संबंधों की मर्मांतक पीड़ा को दर्शाते है। उपन्यास में सबसे बड़ा सवाल मनुष्य द्वारा प्राकृतिकतौर पर स्वस्थ जीवन जीने का अधिकार है। इसी परम्परा में नासिरा शर्मा के उपन्यास 'कुइयाँजान' जल संरक्षण के हमारे प्रयास, पर्यावरण के प्रति हमारी चेतना को एक नया आयाम देता है। पूरा उपन्यास रोचक अंदाज और सहज तरीके से इस मुद्दे पर आवाज उठाता है, इस आवाज पर अगर हमने अभी गौर नहीं किया तो शायद काफी देर हो जाएगी। वेदों में अगर तमाम नदियों का वर्णन है तो क्या यह अकारण है? आज इन सवालों से जुडने की जरूरत है ताकि हम उस पंचतत्व को समझ सके जिसे हमारे महान साहित्य तुलसी ने 'क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा'कहा है। मूलत: जीवन के आधार भूत तत्व के रूप में प्रकृति को समझने उसे स्वीकारने, उसके प्रति संवेदनशील बने रहने का सशक्त व्यापक भाव भारत के पुराने नये तमाम साहित्यिक, साँस्कृतिक स्त्रोतों से छनकर आकार ग्रहण करता है, जहाँ प्रकृति का स्वरूप सहचरी से शुरू होकर चिंतन के केन्द्र में आकर साहित्य व प्रकृति के रिश्तों को विचारात्मक अवदान प्रदान करता है।

निष्कर्ष :- अत: हिन्दी साहित्य में पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं प्रकृति के सौन्दर्य चित्रण व मानवीकरण से लेकर पर्यावरण प्रदूषण ग्लोवललाइजेशन व अन्य महत्वपूर्ण समस्याओं पर चिंतन किया गया है चिन्तन करने के साथ ही साथ उन समस्याओं का तार्किक व उपर्युक्त समाधान प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी साहित्य मानव की प्रकृति से तादाम्य स्थापित कर उसके उचित उपयोग की संस्तुति करता है। वह जानता है कि मानव का सम्पूर्ण अस्तित्व प्रकृति से ही जुड़ा है, वह अपने जीवन तथा सभी आवश्यकताओं की पूर्ती हेतु प्रकृति पर निर्भर है, अत: उसे नष्ट कर वह स्वयं भी सुरक्षित नहीं रह सकता इसीलिए वह मनुष्य को प्रकृति व पर्यावरण के प्रति अनुराग करना सिखाता है जिससे जन-जीवन में प्रकाश विद्यमान रह सके। अस्तु हिन्दी कवियों व साहित्यकारों ने अपने अधिकांश काव्यों व साहित्य में प्रकृति की महत्ता को दर्शाते हुए पर्यावरण के गूढ रहस्यों व तथ्यों को उद्घटित कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति जग-जाग्रति लाने की पूर्ण चेष्ठा की है।

<u>संदर्भ ग्रंथ:-</u>

रामचरितमानस - किष्किन्धाकाण्ड-तुलसीदास(गीताप्रेस गौरखपुर)

हजारीप्रसाद द्विवेदी - ग्रंथावली हजारीप्रसाद द्विवेदी 'कुटज'अंक-09 राजकमल प्रकाशन पृ० 32

'कामायनी' - जयशंकर प्रसाद – प्रथम संस्करण- 1993 पृष्ठ-02

श्रद्धा सर्ग - प्रथम संस्करण

'रह गई दिशा इसी पार' –संजीव राजकमल प्रकाशन 2011

'करंग घोड़ा नीलकंठ हुआ' –महुआ माजी, राजकमल प्रकाशन 2012

समकालीन भारतीय साहित्य - प्रो० राम, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ-11

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

Copyright © 2020 Authors